भूमिका

जिसको नहीं निज देश और निज जाति का अभिमान है।
वह नर नहीं है पशुनिरा और मृतक समान है।

(मैथिली शरणगुप्त)

हम कौन थे क्या हो गये और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी॥

(मैथिली शरणगुप्त)

प्रत्येक मनुष्य को अपनी जाति पर गर्व होता है तथा इस गर्व करने का कारण उस जाति की कुछ विशेषताएँ अवश्य होती है, उसकी कुछ परंपराएँ होती हैं जिनके आधार पर वह गर्व करती है। ये विशेषताएँ किसी भी क्षेत्र में हो सकती है चाहे वह ज्ञान – विज्ञान का क्षेत्र हो, धार्मिकता का क्षेत्र हो, कला व संस्कृति का क्षेत्र हो, विद्वता का क्षेत्र हो,उच्च पदों का क्षेत्र हो, सम्पन्नता का हो आदि। इन सब की जानकारी उसको अपने प्राचीन इतिहास से मिलती है कि प्राचीन काल में उस जाति ने कितनी उच्चता प्राप्त की थी तथा वर्तमान में वह किस स्थिति में है। इसी से प्रेरणा लेकर वह अपनी भावी योजना बनाती है। इन दोनों की जानकारी से ही वह अपने भविष्य के मार्ग का निर्धारण करती है। अपनी जाति की विशेषताओं की जानकारी उसे अपने प्राचीन इतिहास व साहित्य से ही मिलती हैं इसलिए कई जातियों ने अपना इतिहास लिखा है।

मैं न तो इतिहास का विद्यार्थी हूं न कोई भाषा–विद् ही हूँ फिर भी मैने एक दुःसाहस कर इस जाति पर कुछ लिखने के विचार कर मेवाड़ की इस दशोरा जाति का कुछ साहित्य व इतिहास इस जाति को दिया किन्तु मेरा लेखन कार्य केवल मेवाड़ की इस जाति तक ही सीमित रहा। मध्य प्रदेश में इस जाति का बहुत बड़ा समुदाय है किन्तु उनसे मुझे किसी प्रकार का कोई सहयोग नहीं मिला जिससे वहाँ की जानकारी नहीं दे सका। मेवाड़ के दशोरा समाज ने मुझे इस कार्य में भरपूर सहयोग दिया जिसमें सामग्री संकलन, प्रकाशन की व्यवस्था तथा आर्थिक सहयोग आदि मुख्य थे जिससे मैं इस जाति का कुछ साहित्य तैयार कर सका जो इस जाति के लिए एक अमूल्य धरोहर सिद्ध होगी तथा भविष्य में भी उपयोगी होगी ऐसी मेरी मान्यता है। मेवाड़ में निवास करने वाली इस जाति की सही तस्वीर समाज के सामने रखने के लिए ही मैं गत 15 वर्षो से प्रयासरत रहा हूँ तथा आगे भी यदि अवसर मिला तो समाज को कुछ दे सकूंगा, यही कामना है।

बार–बार समाज से आर्थिक सहयोग लेना मैने उचित न समझ कर इस बार मैंने स्वयं ही अपने स्तर पर इसके प्रकाशन का विचार कर इसे आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ।

इस दशोरा जाति को मेवाड़ में आये आज सन् 2005 ई. को 700 वर्ष हुए हैं। इस पर एक विचार आया कि इस जाति के इन 700 वर्षो के स्वरूप व इसकी उपलब्धियों का विवेचन